रामगोपाल विजयवर्गीय की जलरंग पद्धति से निर्मित काव्यात्मक चित्रों में नारी चित्रण का अध्ययन

पी.एच.डी(चित्रकला) की डिग्री के पंजीकरण हेतु

कला और सामाजिक विज्ञान के संकाय में

द आईआईएस विश्वविद्यालय, जयपुर

शोधार्थिनी:

कीर्ति सिंघल

पी.एच.ड़ी.(2011 - 2012)

नामांकन संख्या– ICG/2011/13111

शोध निर्देशिका :

डॉ. अमिता राज गोयल

वरिष्ठ सहआचार्य

द आईआईएस विश्वविद्यालय, जयपुर

दृश्य कला विभाग

जुलाई , 2012

परिचय

रंगों व रेखाओ के जादूगर स्व पदमश्री रामगोपाल विजयवर्गीय जन्मजात कलाकार थे। विजयवर्गीय जी ने अपनी कला यात्रा की पहल तब शुरू की जब यूरोप सभ्यता की आत्मा अपने गौरव के चरमोत्कर्ष शिखर पर विराजमान थी तब सैकडौं वर्षो पुरानी भारतीय संस्कृति विध्वंस और संक्रमण से आच्छादित परिस्थितियों से चलायमान हो रही थी तब भारतीय कला की 'रौ ' व ' लय ' बुरी तरह से विमुखित होकर गलियारों में भटक रही थी तभी देश के कलाजगत में एक बहुमुखी कला सृजन का सूत्रपात हुआ जिसमे नवबंगाल आन्दोलन की अपनी तत्कालीन समस्याएं थी इससे प्रेरित कलाकारों के लिए अपनी सांस्कृतिक परम्पराओ से रूबरू होना आवश्यक था। इसीलिये इस संसार में कुछ पुण्य आत्माओ का जन्म किसी न किसी रूप में भावी पीढियो के मार्गदर्शन व समाज को सही दिशा देने के लिए होता है ऐसे व्यक्तियों के जन्म पर भी प्रकृति अपने आप को गौरवान्वित महसूस करती है। उन महान व्यक्तियों में रामगोपाल विजयवर्गीय जी का जन्म सवाईमाधोपुर जिले के छोटे से गाँव बालेर ठिकाने के साधारण वैश्य परिवार में सन 1905 में हुआ। विजयवर्गीय जी का बचपन साधू राम जी के सानिध्य में रहने के कारण आपका रुझान चित्रों व काव्यो की ओर प्रखर हुआ और यह कला धीरे-धीरे आपके मन मस्तिष्क और आत्मा पर अपना प्रभाव ज़माने लगी। लगभग 16 वर्ष की आयु में आपको जयपुर के महाराजा स्कूल ऑफ़ आर्ट्स में प्रवेश दिलवा दिया गया उस समय असित कुमार हाल्दार वहाँ के प्राचार्य थे और वे अजंता के चित्रों की अनुकृति करवाया करते थे। इस अध्यापन कार्य से रामगोपाल विजयवर्गीय जी को आत्मसंतुष्टि नहीं हुई और आर्ट स्कूल छोड़ अपने मित्र आनंदीलाल के साथ अजमेर चले गए, वहाँ के सेठ भागचंद सोनी से आपने रोजगार माँगा तो उन्होंने आपके हाथ में स्केच बुक देखी और दो चित्र 40 रुपए में ख़रीदे तब आपको लगा कि यह शौक भी कमाने का जरिया हो सकता है तदउपरान्त आपके मन व मस्तिष्क में चित्रकला का प्रभावशाली रूप उत्पन्न हुआ। सन 1924 में पुनः महाराजा स्कूल ऑफ़ आर्ट्स में दाखिला दिला दिया ,इस समय शैलेन्द्रनाथ डे उपप्राचार्य थे और आपने शैलेन्द्रनाथ डे के अधीनस्थ रहकर अपनी कला शिक्षा विधिवत प्राप्त की।

राजस्थान के रामगोपाल विजयवर्गीय जी ने अपने चित्रण, शिक्षण व प्रदर्शन के माध्यम से कला जगत में एक ऐसी दिव्य ज्योति प्रज्वलित की जो कई कलाकारों के लिए आदर्श रूप बनकर प्रेरणा स्त्रोत रही। अपनी कलाभिव्यक्ति में वह सभी संकेत, बिम्ब, रूप और दर्शन संजोये जिसके मार्ग दर्शन में राजस्थान का कला जगत एक नयी उड़ान लेने लगा। चूंकि बचपन में ही आपने संस्कृत, उर्दू,फारसी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था इसीलिए आपको मेघदूत रघुवंश, कुमारसंभव, अभिज्ञान शाकुंतलम, गीतगोविन्द, उमर-ख्ययाम, रामायण आदि को पड़ने में रुचि थी, तब आपने महाकवि कालिदास के ग्रन्थ मेघदूत, कुमारसंभव जैसी रचनागत संवेदनाओ की विरहाकुल अभिव्यक्ति को अपने चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया। चूंकि आपने बंगाली शिक्षको के अधीनस्थ शिक्षा प्राप्त

की थी तो बंगाली शैली का प्रभाव आना स्वाभाविक था इसीलिये यही से काव्यो ने जलरंग पद्धति के माध्यम से अपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया।

विजयवर्गीय जी के काव्यात्मक चित्रो में नारी सौन्दर्यता की एक ऐसी छवि मिलती है जिसमे नारी का सर्वांगीं आदर्श सौंदर्य, विरहणी ,रसिका,वनकन्या, देवकन्या, मालिन, मजदूरिन आदि उनकी कला में अभिव्यक्त हुए है। चित्रों में लयात्मक दिव्य रंगों और उत्कृष्ट भावो के संयोग से रस की जो उत्पति होती है वह ऐसे लोक में ले जाती है जहाँ समुन्द्र की लहरे हिलोरे लेती हुई आगे बढ रही हों। आपके चित्रो में प्रयुक्त मोटी लयपूर्ण रेखाए भारतीय लघुचित्रो में प्राप्त रंगों की गहनता, बंगाल शैली के रंगों की सुकोमलता , अंडाकार मुखो पर अधखुली बड़ी आँखे, लम्बे हाथ, पतली अंगुलिया, और उनकी विविध मुद्राये, अंग- प्रत्यंगो की आकर्षक भंगिमाए आपकी कृतियों की पहचान रही है। रामगोपाल विजयवर्गीय जी के चित्रों की सृजनशीलता ताजगी और काव्य में कल्पनाशीलता के कारण कला सुदृढ थी, विषय वैविध्य अभिव्यंजना का ओज तथा चित्रण की मौलिकता उनकी अपनी विशेषताए है।

कला जगत में पहचान देने के लिए आपने अपने चित्रों का प्रदर्शन भी किया। चित्र कई पत्र- पत्रिकाओ में छपने लगे। कला क्षेत्र में कार्य करते हुए सन 1943 में आपको 'महाराजा स्कूल ऑफ़ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स' में कला शिक्षक पद पर और बाद में प्राचार्य पद पर नियुक्त किया गया, सन 1970 में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा सर्वप्रथम कलाविद की उपाधि से विभूषित किया गया और 1984 में कला व साहित्य दोनों क्षेत्र में आपकी सेवाओ का मूल्यांकन करते हुए पदमश्री का सम्मान मिला।

राजस्थान के प्रथम् चित्रकार के रूप में सन 1928 में 'कलकत्ता फाईन आर्ट सोसाइटी' से रामगोपाल विजयवर्गीय जी के कलाकार जीवन की प्रदर्शन यात्रा प्रारम्भ् हुई जो 4 मई 2003 में म्रत्यु तक अनवरत चलती रही तथा अपने जीवन के 98 वर्ष कलारस मय होकर व्यतीत किये। आपके भावुक ह्रदय ने इस अवधि में चित्रों के साथ अपनी मन की व्यथा को काव्य रूप में प्रकट करते हुए भारतीय कला परंपरा को भी अपनी अथक साधना द्वारा समृद्ध किया था। ऐसे सफल चित्रकार एक गंभीर विचारक, सफल कहानी लेखक और प्रतिभाशाली कवि के मन में चित्रांकन के प्रति एक् विशेष स्वभाविक् मोह था और आपकी सभी रचनाये, चाहे वह रंगों में रंगी हो या शब्दों में बंधी हो हो, जीवन की उर्जा व आशा से सदैव भरी है।

प्रकाशित अनुसंधान कार्य की समीक्षा

- अध्धयन विषय से सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन किये जाने से हम अपनी शोध में आगे न होने वाली त्रुटियों से बच सकते है।
- शोध कार्य में उपयोगी पध्तियो एवं प्रविधियो का ज्ञान हो जाता है।
- भूतकाल में किये हुए शोध-कार्य को पुन दोहराने की भूल से छुटकारा मिल जाता है।
- शोधकर्ता को अध्धयन विषय के सम्बन्ध में एक ऐसी अंतर्द्रष्टि प्राप्त होती है जिससे वह उचित प्रश्न कर सही सूचनाये एकत्रित कर सकता है।
- सम्बंधित साहित्य में प्रलेख,लेख,पत्र, पुस्तके,प्रतिवेदन विषय से सम्बन्धित् शोध् ग्रन्थ आदि आते है।

❖ ***चतुर्वेदी, ममता ; " रामगोपाल विजयवर्गीय : एक शताब्दी की कला यात्रा " में ' चित्र सृजन के आयाम' ; प्रकाशक : राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर; प्रथम संस्करण: 2005*** में बताया गया है कि विजयवर्गीय जी के चित्रों में कालिदास के शब्दों का साकार रूप है, आपकी प्रिय विषय वस्तु पर विचार करे तो सर्वप्रथम काव्यात्मक विषय ही महत्वपूर्ण दृष्टिगत होते है इस विषय पर आधारित चित्र प्राचीन भारतीय संस्कृति का दर्शन करवाते हुए शास्त्रीय श्रेणी में आ जाते है। कला में काव्य को श्रेष्ठ माना गया है क्योकि काव्य में मानव को राग-द्वेष, सुख -दुःख से ऊपर उठाकर आत्मानुभूति के मार्ग द्वारा जीवन के अंतिम सत्य का साक्षात्कार करवाने का सामर्थ्य है। सर्वाधिक चित्र वाश पद्धति में बनाये गए जिनमे काव्य प्रसंगों को जीवंत बनाने में अपना सम्पूर्ण विज्ञान, मनोविज्ञान, सौन्दर्यबोध और भावनात्मकता का उपयोग किया, इन चित्रों में रंगों की अलौकिक पारदर्शिता और रेखाओ कि पटुता, आकृति की भावसंगत मुद्राऐं तथा लघुचित्र शैली जैसा द्विआयामी संयोजन उन्हें अद्वितीय बनाते है।

- परिधान, अलंकार, साज-सज्जा आदि में विचारशील भावो का परिपालन हुआ है। चित्रों में कौशल या सृजन के नाम पर चित्र तत्वों से खिलवाड़ नहीं किया गया है वरन उनमे गहन व संवेदनशील कथ्य बनाये है इसका कारण आप बताते हुए कहते है कि " नारी ब्रह्म कि आदी शक्ति है, कृष्ण ब्रह्म है और रासेश्वरी राधा 'माया', दोनों का मिलन रास लीला है रास से रस का जन्म होता है, रस ही ब्रह्म है और रस ही आनंदस्वरूप है , चित्रों में श्रृंगार रस है जो कि नारी के बिना अधूरा है"।

❖ *गोस्वामी , प्रेमचन्द* ; " *आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तभ* "; *प्रकाशक*: *जयपुर, राजथान हिंदी ग्रन्थ अकादमी*,; *प्रथम संस्करण 1995*

में वर्णित है कि रामगोपाल विजयवर्गीय जी के चित्र भारतीय परंपरा का पोषण करने वाले है जैसा कि आप कहा भी करते थे कि चित्रों में भारतीयता होनी चाहिए और यह भारतीयता हमे रामगोपाल विजयवर्गीय जी के नारी चित्रण में उनकी वेशभूषा व पहनावे से स्पष्ट परिलक्षित होती है। इसके अतिरिक्त वाश पद्धति का वर्णन करते हुए लिखा है कि वाश पद्धति कि पारदर्शी रंगत आपके चित्रों कि मुख्य विशेषता है जो कि मेरे शोध विषय से सम्बंधित है।

❖ *दमामी ए. एल.* ; " *राजस्थान की आधुनिक कला व कलाविद*" " *राजस्थान में कलाविदो का रचना संसार एवं उनकी महत्वपूर्ण कलाकृतियो का समीक्षात्मक विवेचन* "; *प्रकाशक: जवाहर*

कला केंद्र, जयपुर; *प्रथम संस्करण 2004;* में बताया गया है की आपने अजंता की आकृतियो के सौन्दर्यतत्व, बंगाल कला की वाश तकनीक तथा पौराणिक विषयों से उदघृत समसामयिक प्रासंगिक संदर्भो को चिर अभ्यास एवं विलक्षण प्रतिमा से सधी हुयी शैली में व्यक्त किया जैसा की सिद्ध कलाकार अर्थ अथवा सन्दर्भ की खोज अनवरत जारी रखता है और उनकी पुनर्व्याख्या करता है और मूक को अमूक में प्रदर्शित करता है।

- चित्रों में पौराणिक ग्रन्थ जो नीतिशास्त्र की दृष्टी से जीवन की समस्याओ को सुलझाते है, ऐतिहासिक घटनाये जो जीवन को मार्गदर्शित करती है , काल्पनिक विषय जो सौंदर्य का बोध जगाते है, इन सभी के संयोग से एक सुंदर कल्पनाशक्ति चित्र के माध्यम से सभी के समर्थ प्रस्तुत की जाती है जो की उस सृजन के अदृश्य पुलों के जरिये अतीत को वर्तमान से जोड़ देती है अर्थात कला का प्रयोजन बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय है।
- उनके चित्र साहित्यिक उपनिवेश में पनपे है मानसिक आत्मचिंतन में उनका रूपायन हुआ है और जाग्रत दृष्टि से उनकी संरचना हुयी है।

❖ *काजी , मीनाक्षी*; "*राजस्थान की समसामयिक कला" के "राजस्थान की समसामयिक चित्रकला में रेखांकन "*; *प्रकाशक: विपिन बिहारी सक्सेना , जयपुर*; *प्रथम संस्करण 1989*

मीनाक्षी काजी ने रेखांकनो के महत्त्व पर जोर देते हुए बताया है कि बींसवी सदी आते आते कलाओ में रेखाओं की प्रधानता पूर्व की भांति समाप्त होने लगी और बंगाल आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तब राजस्थान के कला क्षेत्र पर भी इसका प्रभाव पड़ा उस समय ऐसे कई कलाकार थे जिनके रेखा प्रधान चित्रों या रेखांकनो से राजथान की कला में नया मोड़ आया रामगोपाल विजयवर्गीय उन अग्रणी राजथानी कलाकारों में से थे जिनकी लयात्मक और अत्यंत कोमल रेखाओ ने नारी के

स्वरुप के नए आयाम, उसके अंग-प्रत्यंग के लावण्या, पारदर्शी वस्त्र, तीखे सुंदर नाक नक्श मेघदूत और अभिज्ञान शाकुंतलम जैसी साहित्यिक रचनाओ के माध्यम से प्रस्तुत किये।

❖ *गौतम. , आर. बी ; "राजस्थान की समसामयिक कला " में " राजस्थान की नव्परम्परावादी कला और कलाकार "; प्रकाशक: विपिन बिहारी सक्सेना, जयपुर ; प्रथम संस्करण १९८९*

जो कलाकार कल्पनात्मक विषयों में अधिक रूचिशील रहता है उसकी कृतियों में अमूर्त प्रतीकों और बिम्बों की बाहुल्यता रहती है, जो स्मृति की सघनता से संपन्न है उनके कलाकर्म में स्मृति की पुनरावर्ती प्रत्यक्ष ज्ञान के द्वारा संजोये गए कलात्मक विषयों पर अत्यधिक रूप से स्थिर् रहती है , जो कि राम गोपाल विजयवर्गीय जी की कला मे स्पष्ट देखने को मिलता है

❖ *गौतम., आर. बी; "आभार "; के " बींसवी सदी के समर्पित कला मनीषी रामगोपाल विजयवर्गीय "; प्रकाशक : राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर*

- बंगाल की वाश पद्धति का उपयोग आपने सुकोमल भावनाओ की अभिव्यक्ति के लिए जबकि अजंता की कला शैली का इनकी कृतियों में प्रभाव मात्र भारतीयपन लाने, उसकी परंपरा की निरंतरता के दृष्टिकोण से किया है।

- कृतित्व की मौलिकता, विषयों की विविधता, भारतीय साहित्य संस्कृति धर्म, और आदर्शो का कलाकृतियों के माध्यम से प्रचार इनकी अभिव्यक्ति का मूल प्रयोजन रहा है, जिनमे इनकी कल्पना ने यथार्थ व सौन्दर्यशील प्रतीकों की रचना कर अपने साध्य को सिद्ध किया है।

❖ *राजपुरोहित, इन्द्रसिंह ; " भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला " ; "राजस्थान की समकालीन कला " प्रकाशक ; 2008*

चित्रों में मानव व प्रकृति का समान चित्रण हुआ है ये चित्र गति, ताजगी व आनंदमय वातावरण की सृष्टि करते है क्योंकि प्रकृति के बीच ही मानव का जन्म होता है, प्रकृति ही नारी स्वरूप है जिसके बिना मानव जीवन अधूरा है

- ***गुप्ता, मोहन लाल ; "राजस्थान की बीसवी सदी की कला ", 'आकृति ' ; प्रकाशक ; समुन्द्र सिंह खंगारोत 'सागर', राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर; विशेषांक 2000-2001***

  - रामगोपाल विजयवर्गीय जी के चित्रों में नारी और श्रृंगार का प्राधान्य पाया जाता है उनकी शैली रसात्मकता और लावण्या से भरपूर है, शास्त्रीय चित्रों में अनूठा लावण्या, संयोजन की कुशलता और उन्मुक्त प्रवाह देखने को मिलता है
  - उम्र खय्याम का जितना अच्छा प्रत्यक्षीकरण किया है अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। चल गति से दृश्यों को यथावत द्रुत गति से चित्रित करने में उनकी अपूर्व क्षमता है।
  - बंगाल शैली ने सामान्य आदमी को पौराणिक, साहित्यिक एवं ऐतिहासिक विषयों से परिचित करवाया। हमारे प्राचीन परिवेश को मूर्त रूप में उपस्थित किया है। उस युग के कलाकारों ने श्रवण दर्शन को प्रत्यक्ष दर्शन में परिवर्तित किया। बीसवी सदी के पूर्वार्ध में वाश शैली को मोडर्न समझा जाता था क्योकि लघु चित्रण से हट कर उसकी विधा एक नवीनता लायी थी।

- ***वशिष्ट , आर. के ; " राजस्थान की चित्रकला में लोकजीवन का चित्रण" ", " आकृति (राजस्थान की कलाधराए)"; प्रकाशक ; समुन्द्र सिंह खंगारोत 'सागर ', राजस्थान ललित कला अकादमी , जयपुर ;***

विजयवर्गीय ने राजस्थान की लोकसंस्कृति, प्राकृतिक सौंदर्य और जन जीवन के विविध क्रियाकलापों को अपनी कलाकृतियों के विषयरूप में रूपायित किया। ग्राम्य जीवन के वातावरण को कैमरा की भांति यथार्थ रूप में चित्रित करने में इनकी सशक्त एवं समर्थ तूलिका ने रेखा और रंगों के सामंजस्य प्रस्तुत किये।

- *प्रताप , रीता ; " भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास ", प्रकाशक : राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी , जयपुर, 2009 ; छठा संस्करण*
    - व्याख्या की गई है कि चित्रों में मानव व प्रकृति के मध्य एक घनिष्ठ सम्बन्ध, एक चिर परिचित सेतु परिलक्षित होता है। रंग व रेखाओ के जरिये प्रकृति व महिला व पुरुष का सुन्दरतम रूप उजागर किया गया है तथा ये चित्र एक आनंदमय वातावरण की स्रष्टि करने वाले है जो कि प्रकृति व मनुष्य का एक मधुर संयोजन है।
    - नारी चित्रण विजयवर्गीय जी का केंद्र बिंदु रहा है और गीत गोविन्द सम्बंधित चित्रों में विस्फारित नेत्र, सुडोल मुख मंडल, घनी लम्बी केश राशी, पुष्ट उरोज और लम्बी इकहरी देहयष्टि राधा को सम्पूर्ण परिभाषित करती है। इसमें नारी का सम्मानीय सौंदर्य का चित्रांकन हुआ है, वही दूसरी और स्फुट चित्रों में नारी को अबला जैसे- हरिजन महिला, माँ बच्चा, कृषक व कन्या आदि में मानवता के दर्शन होते है।
    - विजयवर्गीय जी रंगों कि बजाय रेखाओ पर अधिक केन्द्रित रहे है इससे पहले कि प्रेक्षक का ध्यान रंग सयोजन पर जाये रेखाए पहले ही बोल उठती है, इनके वाश पद्धति पर आधारित सभी चित्र रेखा प्रधान ही रहे है। इन सभी चित्रों में भावपूर्ण रंगों का प्रयो ग किया गया है जो कि आँखों को ठंडक पहुचाती है जिनमे हल्के गुलाबी , हरे,लाल, पीले बैंगनी इत्यादि है।

- ***विजयवर्गीय, रामगोपाल ; "रूपांकन - पदमश्री रामगोपाल विजयवर्गीय अभिनन्दन ग्रन्थ " ; " " कला का दर्शन " ; प्रकाशक: प्रिंटवेळ पब्लिशेर्स, जयपुर 1995***

  विजयवार्गीय जी कहते है कि प्रकृति के बहुरंगी रूपों को देखकर मनुष्य उनसे प्रेरणा लेता है और उससे जो रस प्राप्त होता है उसको विविध कल्पनाओ के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करता है अर्थात मन में उठने वाली वाली भावना अनुभूति तथा कल्पना और श्रवणगोचर होने वाली ध्वनिया अमूर्त की स्थिति से उभर कर रूप ग्रहण कर मूर्त हो जाती है किन्तु हमारे चक्षुओ को सूक्ष्म सरस दृष्टि तब ही मिलती है जब हम उसकी विधिवत साधना करे। चित्र के द्वारा ही ध्वनि को श्रवणगोचर से दृष्टिगोचर बनाया जाता है तथा आनंद को भौतिक पदार्थ में आरोपित किया जाता है।

- ***दमामी ,ए. एल ; " रूपांकन - पदम् श्री रामगोपाल विजयवर्गीय अभिनन्दन ग्रन्थ " में पदम् श्री विजयवर्गीय की कला दृष्टि में ; प्रकाशक: अभिनन्दन समिति, जयपुर 1991*** में बताया गया है कि विश्व विख्यात् अजंता की नारी उनका आदर्श है नारी के विविध रूपों में -पत्नी, प्रेयसी, अभिसारिका, वधु, विरहिणी, रसिका, वनकन्या॥, लोक जीवन की मालिन, मजुदूरिन आदि कला में अभिव्यक्त हुए है। विजयवर्गीय जी की नारी, कला की नारी है। वह मात्र शारीरिक सत्व, स्थिर आकृति नहीं है वरन प्रवाहमान चेतना है नारी रूपांतरित होकर सत्व नारी हो गयी है।

- ***राय, आनंद कृष्ण ; " रूपांकन - पदम् श्री रामगोपाल विजयवर्गीय अभिनन्दन ग्रन्थ " में " मेघदूत की मनोरम कल्पना का प्राणवान चित्रांकन भाव सुमन : एक कलाकार के लिए " ; प्रकाशक: अभिनन्दन समिति, जयपुर 1991;***

- राय आनंद कृष्ण ने बताया है कि मेघदूत चित्रावली में एक ओर बादलो की घुमड़ और दूसरी और युवती के घने बाल और तीसरी ओर सुगन्धित धुए के आवर्त में तीनो एक ही जाति के तीन भिन्न भिन्न आवर्त को जो एक दूसरे से सामान होते हुए भी अपने अपने व्यक्तित्वों के धनी है और इन

सबसे रमरिया आकृति वाली नायिका है। अर्थात आपने मेघदूत चित्रों में भी नारी को चित्रों में केन्द्रित किया है।

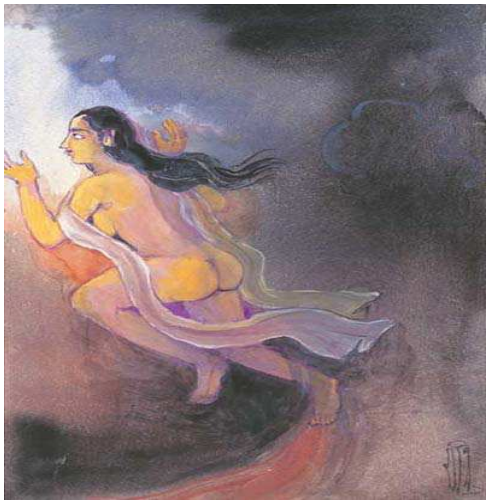

- उनकी सर्जनाये अपनी ताजगी और काव्यात्मक कल्पनाशीलता के कारण बेजोड थी, जिसमे सर्वोपरि अजन्ता से प्रवर्तित एक लावण्यमय मुखाक्रति और देहयश्टि थी आपकी तूलिका द्वारा उसे एक तराशा हुआ रूप दिया जो चित्र की अपेक्षा मूर्ती ज्यादा लगती है, फ़िर भी आपके चित्रो की तरलता विद्यमान है

❖ *मुखर्जी, मोहन ; " रूपांकन - पदम् श्री रामगोपाल विजयवर्गीय अभिनन्दन ग्रन्थ " में " Beauty is in the eyes of the beholder "; प्रकाशक : अभिनन्दन समिति , जयपुर 1991;* में मोहन जी ने बताया है है कि इस आधुनिक काल में विजयवर्गीय जी के प्रत्येक चित्रों के विवरण में - प्रत्येक पेड़ की प्रत्येक पत्ती, रंगीन वस्त्रो का प्रत्येक भाग तक उनके चेहरों के भावो को प्रदर्शित करता है ,जो की राजस्थान की लघु व भित्ति चित्र परंपरा को प्रदर्शित करता है।

निष्कर्ष

बंगाल शैली की जलरंग पद्वति रामगोपाल विजयवर्गीय जी के माध्यम से समाज मे प्रस्तुत हुयी । विजयवर्गीय जी ने अपने आपको चिन्तन के माध्यम से अपनी कल्पनाओ को साकार रूप मे जलरंग पद्वति के द्वारा उकेरा । आपकी कला मे ज्यादातर नारी चित्रण का बहुमुखी कार्य देखने को मिला । नारी के अनेक रूपो व क्रियाकलापो को साकारत्मक रूप मे अभिव्यक्त किया गया । अपनी कल्पनाओ को उन्होने प्रक्रति चित्रण के रूप मे भी उबारा और काव्यात्मक चित्रो मे उसका सुन्दरतम रूप प्रस्तुत किया । हाँलाकि विजयवर्गीय जी ने अन्य लोक जीवन पर आधारित चित्र व रेखांकन भी बनाये पर आपकी कला, काव्यो पर अत्यधिक रूप से आरूण रही । आपकी सम्पूर्ण कला मे रेखाये अत्यधिक रूप से बेजोड व प्रवाहमान रही है, जो कि विजयवर्गीय जी की शैली की प्राथमिक विशेषता है यह वाश पद्वति के कारण था जिसे आपने अपनी रूचि अनुसार सभी चित्रो मे उपयोग किया मैने अपने विषय से सम्बन्धित पुस्तको, पत्रिकाओ आदि का पुनरावालोकन किया व काफ़ी हद तक विचार मग्न रहकर इस निष्कर्ष पर पहुंची कि रामगोपाल विजयवर्गीय जी की कला अथक प्रयासों और विषम परिस्थितियों मे प्राप्त की गयी एक साधक की साधना है । नारी चित्रण मे आपकी गहनता, आध्यात्म प्रव्रति और उसकी मार्मिक भावनाओ का अटूट ज्ञान समाहित है ।

प्रेरणास्त्रोत

कला जगत की चेतना के प्रवाह को गतिशील बनाये रखने के लिए दृश्य कला को विकसित किया जाना जरुरी है, इसी सन्दर्भ में मानव शरीर में छिपा हुआ कलाकार पूर्ण रूप से अपने आप से निकलकर अपने वास्तविक रूप में उपस्थित होता है। मन में चल रहे उस समय व्याकुलता के भाव और अंतर्मन के सवाल कला को जानने की जिज्ञासा उत्पन्न करते है, आत्मा बार बार इन विषय वस्तुओ की खोज करती रहती है, उसी समय मेरे मन में इन विषय वस्तुओ को जानने की व्याकुलता उत्पन्न हो जाती है। रामगोपाल विजयवर्गीय जी के चित्रों में नारी चित्र में जो वात्सल्य, करूणा, प्रेम, विरह आदि देखने को मिली उससे मेरे मन में नारी को जानने की अभिलाषाए उत्पन्न हुई आखिर एक ही नारी में इतने सारे भाव एक चित्रकार के माध्यम् से कैसे उत्पन्न हुए ? इस प्रश्न को अपना विषय बनाकर मैंने अपने शोध् कार्य के लिये चुना।

रेखाओ और जलरंग पद्धति के माध्यम से जो नारी चित्रण को आपने बखूबी तरीके से प्रस्तुत किया वो देखने योग्य है। नारी चित्रणों में रामगोपाल विजयवर्गीय ने धार्मिक काव्यो से जुड़े नारी के स्थान व रूप को अपनी कविताओ वा चित्रो के माध्यम स उद्वरित किया है। आपने अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से नारी को पुष्पचादित केश विन्यास , देवकन्या से मोहक कमलो की तरह नयन तथा लावण्यात्मक् मुद्राओ के से अलौकिक रूप को नारी के कटाक्ष पूर्ण चंचल नयन, मादक अंगो अस्फुट मुस्कान और यौनपरक मांसल शरीर को लौकिक रूप में बड़े ही सुन्दरतम रूप मे प्रकट किया है। जिसका कि हम केवल अपनी कल्पनाओ में ही रूप बना पाते है बाकि उसको समाज के सामने प्रकट नहीं कर पाते , क्योंकि कोई भी कलाकार जब तक अपनी कल्पनाशक्ति को तूलिका या कलम के माध्यम से नहीं उकेर सकता जब तक कि वह अपने मन को अपने वश में न कर सके या अपनी अंतरात्मा को न समझ सके। जिसे रामगोपाल विजयवर्गीय जी ने स्वयं समझा और उसे अपने चित्रों के माध्यम से समाज के समक्ष प्रदर्शित किया ताकि लोग अपनी भारतीय संस्कृति को पहचाने और नारी को आदर्श रूप में मानकर उसे सम्मानीय दृष्टि से देखे इसीलिए मैंने नारी को विजयवर्गीय जी के काव्यात्मक चित्रों में चुना।

अध्ययन का क्षेत्र व उद्देश्य

- रामगोपाल विजयवर्गीय के नारी चित्रण् के लौकिक व अलौकिक सौंदर्य की अनुपम अनुकृति की छठा
- विजयवर्गीय जी के चित्रणों में नारी की सार्थकता की अभिव्यक्ति
- जलरंग पद्धति में चित्रों के प्रति अभिरूचि
- काव्यात्मक चित्रों का उद्देश्य

सीमायें

- अपने विषय मे हम नारी चित्रण केवल जलरंग पद्वति मे ही करेंगे न कि रेखाचित्रों मे भी क्योंकि विजयवर्गीय जी ने रेखांकन के माध्यम से भी नारी क अभिव्यक्त किया है।
- हमारे द्वारा नारी का अध्ध्यन केवल काव्य से सम्बन्धित चित्र मे ही किया जायेगा ।

शोध प्रक्रिया

शोध प्रक्रिया कार्य करने की ऐसी पद्वति है जिनमे की शोधकर्ता व्यक्ति विशेष के तथ्यों का अध्धयन कर उसका प्रस्तुतीकरण देता है शोधकर्ता अपने कार्य करने की पद्वति के अंतर्गत कुछ नियमो की पलना भी करे वह इन बातो का ध्यान रखे की उसके जुटाए हुए तथ्य व उनकी रूपरेखा सही दिशा देने वाली व उसका अर्थ समझाने वाली लिपि हो इन्ही प्रकिया को ध्यान में रखकर उसके द्वारा लिखी गयी रूपरेखा पूर्ण रूप से सही होती है शोध्प्रक्रिया के प्रारूप को निम्नलिखित भागो में वर्णित किया गया है-

सर्वेक्षण

तथ्यों का संकलन

साक्षात्कार या पत्रिकाए

सर्वेक्षण:

सर्वेक्षण के अन्तर्गत अपने विषय से सम्बंधित किये गए तथ्यों का आकलन करना होता है जिसमे कि व्यक्ति विशेष से हमारे कार्य करने की प्रणाली को सही दिशा प्रदान करते है सर्वेक्षण के अन्तर्गत व्यक्ति के कार्य करने की कार्य शाला उनके मित्रगन, परिजन, शिष्य, से प्रत्यक्ष रूप से मिलकर अपने तथ्यों को सकारात्मक रूप देंते है विजयवर्गीय जी के चित्रों में नारी चित्रण का उद्देश्य व उसमे अन्तेर्निहित चित्रकार की मनोदशा को समझने का प्रयास करेंगे तथा समस्या उन्मूलक तथ्यों को सुस्पष्ट व सूचीबद्ध करेंगे।

तथ्यों का संकलन:

शोधकर्ता अपने शोधकार्य में अनेक प्रकार की सामग्रियों एवं संकलन को सकारात्मक रूप देता है। सम्पूर्ण अध्धयन के अंतर्गत कई तथ्य व सूचनाये ऐसी होती है जिनको अध्धयन करता स्वयं एकत्र करता है जिनमे उस विषय से सम्बंधित चित्रों को प्रत्यक्षदेखना उस कार्यशाला में जाकर वंहा से प्रदत जानकारिया जुटाना तथा दुसरे किसी संस्थाओ व समितियों द्वारा एकत्र सामग्री को अपने अध्धयन में उपयोग करता है जो उनकी जीवनियो, पुस्तकों, डायरियों तथा प्रतिवेदनो के रूप में हमे उपलब्ध होती है जिनका अध्धयन शोधकर्ता द्वारा किया जाता है। तथ्यों का संकलन करने की दो पद्वातियाँ मानी जाती है प्राथमिक व द्वैतयिक ।

रामगोपाल जी की कला का अध्धयन करने के लिए आप से सम्बंधित लोगो से ही जानकारी लेना संभव हो पायेगा अथवा संग्रहालयो, पुस्तकालयों के माध्यम से ही तथ्यों को संकलित करना होगा

साक्षात्कार एवं पत्रिकाए:

शोधकर्ता अपने कार्य में व्यक्ति विशेष से जुड़े हुए समुद्दय से साक्षात्कार करता है एवं अथ्यो की जानकारी जुटता है जिससे की उस व्यक्ति विशेष से प्राप्त कला की जानकारी पूर्ण रूप से हमे मिले। इसके अलावा उस समय से चली आ रही शोधर्ता की अध्ययन सामग्री(पत्रिकाए) से अध्ययन प्राप्त कर अपने तथ्यों को सकारात्मक रूप देने के लिए जानकारी जुटानी होगी।

उपलब्ध सुविधाएं

- किताबें
- पुस्तकालय
- इंटरनेट
- पत्रिकाओं
- शोध अध्ययन
- संग्रहालय और अन्य निजी संग्रह

सन्दर्भ सूंची

- चतुर्वेदी ,ममता; "रामगोपाल विजयवर्गीय: एक शताब्दी की कला यात्रा" ; प्रकाशक: राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर; प्रथम संस्करण: 2005

- दमामी, ए. एल; " पदम् श्री विजयवर्गीय की कला द्रष्टि " में "रूपांकन - पदम् श्री रामगोपाल विजयवर्गीय अभिनन्दन ग्रन्थ" मे; प्रकाशक: अभिनन्दन समिति , जयपुर 1991

- गौतम., आर. बी; " पदम् श्री विजयवर्गीय की कला द्रष्टि में" "रूपांकन - पदम् श्री रामगोपाल विजयवर्गीय अभिनन्दन ग्रन्थ" में ; प्रकाशक: अभिनन्दन समिति, जयपुर 1991

- विजयवर्गीय, रामगोपाल ; "कला का दर्शन" "रूपांकन- पदमश्री रामगोपाल विजयवर्गीय अभिनन्दन ग्रन्थ ";; प्रकाशक: प्रिंटवेळ पब्लिशेर्स, जयपुर 1995

- प्रताप, रीता ; "भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास", प्रकाशक: राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2009; छठा संस्करण;

- गौतम,. आर. बी; " आभार "; प्रकाशक: जयपुर ,राजस्थान ललित कला अकादमी

- मुखर्जी, मोहन ; “ Beauty is in the eyes of the beholder ” " रूपांकन - पदम् श्री रामगोपाल विजयवर्गीय अभिनन्दन ग्रन्थ" में; प्रकाशक: अभिनन्दन समिति, जयपुर 1991;
- दमामी., ए. एल ; ”राजस्थान की आधुनिक कला एवं कलाविद” ; प्रकाशक : जवाहर कला केंद्र ,प्रथम संस्करण: 2004
- गोस्वामी प्रेमचंद; “आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ” ; प्रकाशक: राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर; प्रथम संस्करण: 1995
- काजी, मीनाक्षी ; " राजस्थान की समसामयिक चित्रकला में रेखांकन" “राजस्थान की समसामयिक कला “; प्रकाशक: विपिन बिहारी सक्सेना, जयपुर; प्रथम संस्करण 1989
- गौतम., आर. बी; "राजथान की नव्परम्परा वादी कला और कलाकार" “राजस्थान की समसामयिक कला में” ; प्रकाशक: विपिन बिहारी सक्सेना, जयपुर ; प्रथम संस्करण १९८९
- राजपुरोहित इन्द्रसिंह ; "राजस्थान की समकालीन कला " "भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला " ; प्रकाशक ; 2008
- वशिष्ठ , आर. के ; " राजस्थान की चित्रकला में लोकजीवन का चित्रण” ", "आकृति (राजस्थान की कलाधराए)"; प्रकाशक ;समुन्द्र सिंह खंगारोत 'सागर ';राजस्थान ललित कला अकादमी , जयपुर ;
- गुप्ता, मोहन लाल ; "राजस्थान की बीसवी सदी की कला ", ‘आकृति ’ ; प्रकाशक ; समुन्द्र सिंह खंगारोत 'सागर', राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर; विशेषांक 2000-2001
- प्रभाकर, मनोहर ; सौजन्य: ललित कला अकादमी, नई दिल्ली (http://www.kumargallery.com/pastexhibitions/ramgopal.htm

- गौतम, त्रिलोकी नाथ ; “भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास”; प्रकाशक : ज्ञान मंदिर , जयपुर, प्रथम संस्करण :2010

शोध की सामग्री

1. परिचय
2. प्रकाशित अनुसंधान कार्य की समीक्षा
3. अध्ययन का क्षेत्र व उद्देश्य
4. कार्यप्रणाली
5. सन्दर्भ सूंची
6. अध्याय विभाजन
    - रामगोपाल विजयवर्गीय जी की कला पर बंगाल शैली का प्रभाव
    - जलरंग तकनीक में चित्रों की सृजनता
    - काव्यात्मक चित्रण में कार्य करने की अभिरूचि

- नारी चित्रण के अनुपम सौन्दर्यता का प्रस्तुतीकरण

7. निष्कर्ष

8. चित्रावली